2. वर्ण विचार

कोई भी भाषा सार्थक वर्णों, शब्दों और वाक्यों के सही क्रम से बनती है। व्याकरण शास्त्र के पहले अंग है वर्ण विचार के अंतर्गत वर्णों के उच्चारण और लेखन के शुद्ध प्रयोग पर विचार किया जाता है। वर्ण भाषा की सबसे छोटी ध्वनि होती है जिसके और टुकड़े नहीं हो सकते।

शिक्षण-संकेत

- शिक्षक/शिक्षिका छात्रों से पूछें, वर्णमाला किसे कहते हैं। उनसे वर्णमाला सुनें।
- समझाएँ, मुँह से निकलने वाली छोटी से छोटी ध्वनि ही वर्ण होती है। वर्ण के भेदों से अवगत कराएँ।
- वर्णमाला के स्वर, व्यंजन, अनुस्वार, अनुनासिक, विसर्ग, स्पर्श व्यंजन, अंतस्थ ऊष्म, संयुक्त तथा गृहीत व्यंजन पूछें फिर बताएँ।
- स्वर के तीनों प्रकार-ह्रस्व, दीर्घ तथा प्लुत स्वर समझाएँ।
- समझाएँ, स्वर के भेदों में उच्चारण के आधार पर अंतर किया जाता है।
- व्यंजन के भेदों के बारे में बताएँ। स्पर्श, अंतस्थ तथा ऊष्म व्यंजनों को समझाएँ तथा सभी वर्णों का उच्चरण स्थान के आधार पर उच्चारण करके दिखाएँ।
- क्ष, त्र, ज्ञ, श्र संयुक्त व्यंजन बनाना बताएँ। छात्रों से इसकी पुनरावृत्ति करवाएँ।
- बताएँ, अनुस्वार, अनुनासिक तथा विसर्ग को अयोगवाह कहते हैं। इनका प्रयोग समझाएँ। आगत स्वर 'ऑ' का प्रयोग अंग्रेज़ी शब्दों के हिंदी लेखन में किया जाता है। द्‌वित्व व्यंजनों से शब्द बनवाएँ।
- वर्ण-विच्छेद करना छात्र पिछली कक्षाओं में सीख चुके हैं। ब्लैकबोर्ड पर कुछ शब्द लिखें और छात्रों से उनका वर्ण-विच्छेद करवाएँ।
- 'र' के रूपों के बारे में विस्तारपूर्वक समझाएँ तथा फिर छात्रों से इनका अभ्यास भी करवाएँ।